

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ मंगलाचरणम् ॥
हृदं॥ प्रथमवंदि परब्रह्म॥ परमभानंदस्वरूपं॥
दुतियवंदि गुरुदेवीद्वयोजिह्मानश्रनपं॥ त्रिंति
यवंदिसबसंतजोरिकुरतिनकेआगत्य॥ मनव
चकायप्राणमकरतनयभ्रमसवप्रागत्य॥ इ
हिनांतिमंगलाचरणकरिसुंदरग्रंथवर्णानि
ये॥ तहविघ्नकोऊउप्यजय॥ यहनिहृदयव
रिमानिये॥ ॥ उदाहणे॥ दोहाहृदं॥ ब्रह्मप्राणम्य
प्राणम्यगुरुपुनिप्राणम्यसवसंत॥ करतमंग
लाचारमनासतविघ्नअनंत॥ ॥ उदेवब्रह्मगु
रुसंतउह॥ वस्तुविराजतरक॥ वचनविलास
प्रियागत्य॥ वंदनप्रावविवेक॥ ॥ ॥ अथ चं
वनेनरह॥ वरन्योचाहतग्रंथकोकहाबुडि॥

मम हृदय अति अगाध मुनि कहत हैं सुंदर जान
समुद्र तान समुद्र ग्रंथ अव-
चाषों बड़त जाति मन महि अजिलायों यथा
सक्ति हं बनि निष्पुना अं॥ जौ स डुर पहि अग
पां अं॥ अथ ग्रंथ वर्णन सो रचन है हि
ह अति गंभीर उतल हरि आनंद की मधुसु
या को नीर सकल पदार्थ मध्य है ॥
जाति जिती सब कुंदन की वऊ सी पनई रहि
सागर माहो है तिन में मुक्ता फल अर्थ लहे उन
को हित सो अवगांही सुंदर पैठि सके नहि जीव
त देडुव की मर जीवहि जांही ॥ जे न रजान कह
वत है अति गर्व नरे तिन की गति नांही ॥
कवि तत्कै जग त सो है जिन कै संतन की नाव

वैजना सुउदासरहत है॥ गनतनको ऊरं कनर
व॥ बाद बिबाद करतन कै ही कवहं वस्तु जानि वे
को अति चाव॥ सुंदर जिनकी मति है असी॥ ते प
ठहि गेया दरियाव॥ ॥ ॥ ॥ सुत क
लित्र निज देह आपु को वंधन त॥ कूटों को न उ
पाय है उर अंतर आनत॥ जन्म मरन की संक
रहे नि सदिन मन माही॥ चतुरासी के डखन
हा कहु वरने जाही॥ हिजांति रहै सो चत सदा॥ सं
तनि को पूछत फिरै॥ को है असी रा डुर कही॥ जे
मेरी कार्य करै॥ ॥ ॥ अष्ट गुरु देव की डुलानता॥
वै न रहै कही॥ गुरु देव विना नही मारग सुख्य॥
गुरु विन भक्ति न जानै॥ गुरु देव नानही संराय भा
ग्य॥ गुरु विन लहै न जानै॥ गुरु देव विन नही का
यै है॥ लोक बेद योगा वै॥ गुरु देव विना नही स

कहें दे॥
हुतिकोई गुरगोवांश्चताव॥ गुरदेवविनां नही प्री
गुरदेवविनां नही भागजगे॥ गुरदेवविनां नही सुइहं॥ गुरदेववि
तिलगे॥ गुरदेवविनां नही सुइहं॥ गुरके प्रस
नां नही मोक्षपद॥ गुरके प्रसाद न वड
द बुद्धि उत्तम दशाकों ग्रह॥ गुरके प्रसाद न वड
विसराईये॥ गुरके प्रसाद प्रे म प्रीति हं अधिक
वाटे॥ गुरके प्रसाद रां प्र नाम गुन गाईये॥ गुरके
प्रसाद सव जोग की जुगति जानै॥ गुरके प्रसाद
पूज्य में समाधि लाईये॥ सुंदर कहत गुरदेव जे
कृपाल होहि॥ तिनके प्रसाद तत्व ज्ञान पुन्य पाई
ये॥ गुरके सरनें आइ हेतव हाउ प
जे जान॥ तिमर कहै कै सें रहे॥ प्रगट होइ जव न
न॥ गुरके सरनें आइ हेतव हाउ प
लेय लीन नित्य सीतल हि सुहि देय॥ क्रोध र

नदीजै॥३॥दृष्टीदीनपांणीकहोवह्यवांणी॥रि
दोप्रेमजीजेअभैदांनदीजै॥जतीजैनदेवे
सर्वेप्रेषपेवेतुमैंचितधाजैअभैदांनदीजै
॥४॥फिसोदेसदेसाकिरदूरिकेसानहीयो
पतीजै॥अभैदांनदीजै॥गयोआयुसारो
नयोसोचचारोबघादेहकीजैअभैदांन
दीजै॥५॥करोमोजअसीरहैबुडिवैसीशु
धानित्ययीजैअभैदांनदीजै॥६॥इतिप्रा
द॥मुदितामयगुरद्वेदधिदानतासिष्यकीस
र्ववताऊंजेवजोरजोतपूहिहै
॥७॥प्रसन्न॥पंथ॥६॥करजोरिअसिष्यक
रिप्रणमतवप्रभकरामनधरिविरामहोके
नकोनयहजगतआहिजन्म

[illegible]

नय हसंदेह जागै सो वै कौन सो ॥ ये तो जड मन दे
ह ॥ भ्रम को भ्रम के सैं प्रयो ॥ २६ ॥ श्री गुरु रुवा च ॥
कुंडलिया कुंद ॥ सिष्य कहं लौं पूछि है मै तो उत्तर
दीन ॥ तव लग चित्त न आइ है ॥ जव लग हृदय मली
न ॥ जव लग हृदय मली न यथार्थ के सैं जानै ॥ भ्रम
निगुन मय ब्रह्मा पुनाहि न दृष्टि पहि चानै ॥ क
हि वै पुनि वै करु ॥ ज्ञान उप जैन जहां लौं ॥ मै तै
उत्तर दयो शिष्य पूछि है कहं लौं ॥ इति श्री सुंदर
दासेन विरचितः ज्ञान सुमुद्रे गुर सिष्य लह नना
मप्रथमो लहरा ॥ १ ॥ सिष्य उवाच ॥ दोहा कुंद ॥ स्वा
मी हृदय मली न मम ॥ सुहृद कवन विधि होइ ॥ सोई
कहो उपाइ अव ॥ संशय रहै न कोइ ॥ १ ॥ श्री गुरु रुवा
च ॥ चौ पई कुंद ॥ पुनहु सिष्य ये तीनि उपाइ
जोग हठ जोग कराई

लावे तव तं शुद्ध स्व रूप ह्या वै ॥ १ ॥
अव न त क हौ गुरु के प्रकार ह
मोग अंग पां ऊं वि चार पुनि सां र व सु जो ग व त
व ना थ ॥ च व सा ग र व ड त ग ह ड हा थ ॥
कार है ता के भेद ॥ दशमी प्रेम ल द्वा ण क हिए सा प
वै ज के निर्वेद ॥ परा भ ग ति है ता के आ गे से व क
से व न हो श वि के द ॥ उत्त म म ध्य क नि वृ ती नि वि
धि सुं द र श न तें मि टि है पे द ॥
न व धा न क ति व पां नि क हौ गुरु मि न्त्र मि
न क र ॥ प्रेम ल द्वा ना को न श्रु ना व ड सी स हा थ ध
रि परा य ति को भै व क हौ प्र भु को न प्र का रा के
उ ति म को म ध्य क व न क नि वृ ति र धा रा य ड द
या स्पं धु मा सो क ह ड ॥ तु म स मा न न हि को र है ज व

कृपाकटाक्षहिंदुषिणो तवममकार्यहोसहै
सुनिष्ठनवधा
जतिविधानं अवनकीस्तनसुमरणं जानप
दलेननं रचनवदन हसभक्तसरव्यत्वस
त्येण
इतिनवअंगनिजानि सु
तित्तिअनुकामकीजिय सब हाकोरुपदानि
जतिकनिहायहकहा
एवंनप्रभुकोनलोकहिय कारतन
कोनदिहिलहिंदो जुसमरनकोनकहिदाजे
चरनसेवाभुकोकीजी अर्चनाकोनविधि
होई वंदनाकोनगुरुसाई जुहास्यसरव्यत्वप
हिचानो निदेदनआत्माजानो
येतथेलकीजेवमोहिअनुक्रमसोकोहा
तुमहपालगुरुदेवपूकताविलगाममानिये
सिपातोहिक

नलावे तव तं शुद्ध स्वस्व पा... ॥२॥ शिखर...
रापहरी... अवभक्ति कहो गुरु के प्रकार हू
जोग अंग पांऊं विचारो पुनि सार बसु जोग वत
वनाथ। चवसागर खूडत गहक हाथ ॥२॥ शिखर...
रव... प्र... इत व... क...
कार है ता के जेद ॥ दशमी प्रेम लक्षणा कहिए साप
वैजो के निर्वेद ॥ परा भगति है ता के आगे ॥ स्वक
सेवान हो शिव के ॥ उत्तम मध्यक निवृत्ती निवि
धिसुंदर इन तें मिटि है पेद ॥ ॥२॥ शिखर...
नवधा भक्ति वपां निक हो गुरु भिन्न भि
नकार ॥ प्रेम लक्षणा को न सुनावहु सी सहाय ध
रि परा भक्ति को भेव कहो प्रभु को न प्रकारा के
उत्तम को मध्यक वनक निवृत्ति रधारा यहु
या स्पंद मो सां कहहु ॥ तुम समान नहि को है ज

कौजेदृष्टुनिसिद्धं उंतोहिदताऽ आरौपिकै
तहजावदुपनौसंश्वे मनलाऽ रचिजावकी
जंदिरुनुपम अकलमूतिमाहपुनिजाव
सिंघाश्रीवराजैजावदितकहुनाहि नि
जजावकीतहकरैपुजात्रैठिसन्मुखदास नि
जजावकीसवसौजजाने नित्यस्वामीपास
पुनिजावकीकोकलसभरिधार जावनीर
नदाश्करिजावहीकेवस्रदङ्गविधिअंगव
नाशाशा तहजावचंदनजावकेसरि जावक
रिधसिलेऊ पुनिजावहीकरिचरचिस्वामी
तिलकमस्तकदेऊ लेजावहीकेपुण्यउत्तमगु
हेमालअनूप पराश्वचुकोनिराजिजयसि
षजावदेदेधुपा तहजावहीलेधरैभोज
नजावलादेनोग पुनिजावहीकरिकैलम

जुकेजोग तहभावहीकोजाइहाप
नकरसंचि तहभावहीकीकरेथा
नवचि तहभावहीकीघंटजा
ननरदंग तहभावहीकेरावदन
ननरग यहभावहीकीआतीक
ननप्रनाम बरक्ततिवडुविधिउ
ननतैतैतम

अहोहरिदेवनजानतसेव अ
अहोतवपायमुनौ यहगांयग
अनाथअनाथअनाथअनाथ
अननितअहोप्रनुसत्य अ
अविगत्यअहोप्रनित्र
अनिहत्यनिहत्य अ

हो जगत्पदलनासतु ॥ गुरा नन (तेन के सव
जाहि वक्राव करीतु मसंतनकी जु सहाइ ॥
अहो हरि हो हरि हो हरि राई ॥ अहो प्रभु हो
सव जगन सयां नद योतु मगर्न धवै पय या
ना ॥ अतौ अवधै न करै यति याल ॥ अहो ह
रि हो हरि हो हो हरि लाल ॥ न जे पुनु व
रुपु स्युं उमहे सा न जे सुनका दिक नार्द से स ॥
न जे पुनि और अनेक हो साध अगाध अगाध
अगाध ॥ अहो प्रुषधां मकहे मुनि नाम ॥ अ
हो प्रुषदै न कहै मुनि वैना ॥ अहो प्रुषरूप कहै
मुनि नूपा ॥ अरूप अरूप अरूप अरूप ॥
अहो जगदादि अहो जगदंता ॥ अहो जग मध्य क
है सव सता ॥ अहो जग जीव अहो जग तंत ॥ अ

येसकलपञ्चकेंजोग तहभावहीकोजोइहाप
कभावघृतकरिसीचि तहभावहीकीकरेया
लीधरैताकेवीचि तहभावहीकीघटजा
लरि। शंषतालमदंग। तहभावहीकेरावून
नारहेअतिमेरग यहभावहीकीआतीक
रिकैरेवकुतपनाम तवरक्तविबुविधिउ
चैरेधुनिमहितलेलेनाम
होहरिगइ परोतवपायमुनो यहगांयग
होममहाय अनाथअनाथअनाथअनाथ
य अहोपुनृतित्यअहोपुनृतित्य अ
होअविनामअहोअविगत्यअहोपुनृतित्य
होअविनामअहोअविगत्यअहोपुनृतित्य अ

हो प्रनुपावननामतुम्भार न जैतिन के सव
जाहि विवकाश करीतु मसंतन कीजु सहाइ॥
अहो हरि हो हरि हो हरि राई॥ अहो प्रनु हो
सब जॉन सयांत दयातु मगर्न धकें पयया
ना प्रु तो अवक्यो न करों धति पाला अहो ह
रि हो हरि हो हो हरि लाल॥ न जै प्रनु प्र
रूप पुस्तं उमहे सा न जै सनकादिक नार्द से स॥
न जै युनि और अनेक ही साध अगाध अगाध
अगाध॥ अहो प्रु षधां सकहे
हो प्रु षदे न के हे मुनि बैना
मुनि नूपा अरूप अरूप अरूप
अहो जगदादि अहो जगदंत
है सब सता अहो जग जीव अ

येसकलपञ्चकेंजोग तहभावहीकोजोइदीप
कभावधृतकरिसीचि तहभावहीकीकरेया
लीधरेताकैवीचि तहभावहीकीघंटज
लरिशंषतालमदंग तहभावहीकेरावून
नारहेअतिसेरंग यहभावहीकीआतीक
रिकरेवकुतप्रनाम तवरक्तितवकुविधिउ
चैरेधुनिसहितलेलेनाम
अहोहरिदेवनजानतसेव अ
होहरिगाइ परोतवपायसुनौ यहगांघग
होममहाय अनाथअनाथअनाथअनाथ
य अहोपूनुनित्यअहोपूनुसत्य अ
होअविनामअहोअविगत्यअहोपूनिनू
इमेजुप्रतिनिहत्यनिहत्यनिहत्य अ

हो प्रभु पावन नाम तुम्हारा न जै तिन के सब
जाहि विकार करीतु मसंतन कीजु सहाइ॥
अहो हरि हो हरि हो हरि राई॥ अहो प्रभु हो
सब जान स्यांत दया तु मगर्न धक्के पय पा
ना॥ अतः अवक्यों न करैं यतिपाल॥ अहो ह
रि हो हरि हो हरि हो हरि लाल॥ न जै प्रभु व
न जै पुनि और अनेक ही साध अगाध अगाध
अगाध॥ अहो प्रभु धां म कहै मुनिनाम॥ अ
हो प्रभु देन कहै मुनिबेना॥ अहो प्रभु रूप
मुनि रूप॥ अरूप अरूप अरूप अरूप॥
अहो जगदादि अहो जगदंता॥ अहो
सब सता॥ अहो जग चीरता॥ अहो

[illegible]

[illegible]

होसमुझासुनिकनिमृयहमधाहृजकिमुना
शकृपाकरिकौनअ वजांनतहोगुरुदेवजुअ
सरहोहोशकव॥रह॥प्रापुतनवाचालर
गकद॥शिष्यपुणंऊतोहिप्रेमलहणमति
कौ॥सावधानअवहेहि॥जोतेरेसिरिआगिहे
॥१॥इहवहंद॥प्रेमलगोपमेस्वरस्यातवभूति
गयोसुवहाधरवारा ज्योउनमतफिरेजित
हातितनैकुरहानसरीरसंजारा स्वासउस्वा
सवठैसवरोमचलैदृगनीरअषडितधारा
पुदरकौनकरैनवधाविधि काकिपस्योर
सपीमतवारा॥इपानत॥जाराजकुंदान
लाजकानिलोककीनवेदकोकहोकरे॥न
संकभूतप्रेतकी नदेवजद्वतैडरे॥पुनैन
कानऔरकीइसैनऔरअहण॥कहैन
मुऔरवातमक्तिप्रेमलहण॥३॥राग

कौटुम्बिक विषय नहरि लौंचितो संदाठ ज्यो
सौरहिए कोऊ न जानि सके यह भक्ति॥
प्रेमलक्षण कहिए॥ १॥ विषय मादु
प्रेमाधीना कृष्ण डौले॥ कौका कौहो वान
वैले॥ जे सै गोपी भूली देहा को चाहे जा सौने
हा॥ २॥ कृष्ण यदुं॥ कवडुं के हसि उठय नृत्य
करि रोचन लागय॥ कवडुं गदकं ठ सव्य निक
सैनहि आगय॥ कवडुं हृदय उमंगि॥ वडुं तर्ज चै
सुरगा दे॥ कवडुं के मुख मोन मगन अँसै रहि ज
वै॥ तो चितव्य हरि सो लगी सावधान के सै र
है॥ यह प्रेमलक्षण भक्ति है सिष्य पुनऊ सडुर
कहै॥ ३॥ मन हर हंदा॥ नारविन मीन दूषी न्ही
रविन सिखु जै सै पीर जा के ओषध विन कै सै र
जावु है॥ चातर गज्यो स्वांति बूंद

चंदनकीचाहिकरि सपेयकृत्तातुहे निधनज्ये
धनचाहैकांमानीको कंतचाहि असीजाकेचाहि
ताकोककुनसुहातुहे प्रेमकोप्रभावत्रैसोप्रेम
तहानेमकैसो सुंदरकहतयहप्रेमहीकीवातु
हे प्रेमचोपदना यहप्रेमभक्तिजाकेघटिहोई
ताहिककुनसुहावै पुनिभूषत्रिषानहलागे
वाकेनिसदिननिदनआवै मुखऊपरपारीख
सासीरानैनऊनीऊरलायो ॥ प्रेमगटचिन्हदास
तहेताकेप्रेमनडुरैडरायो ॥ प्रेमहोतुहताप्रेम
भक्तियहभैकहा जानैविरलाकोश्रुदयकलुत
क्योंरहेजाघटिअसीहोई ॥ प्रेमविष्णुबलनाचो
परहोतास्वामीप्रेमभक्तियहगाई सोतौहुमम
धमस्तसुनाईउत्तमभक्तिपराप्रभुकेसोकरऊ
नगहकहिरैतैसी ॥ प्रेमप्रकृतवाजादोहकर
सिषतैरेअधाबढी सुनिवेकीअतिप्यासप

राजकितोसोंकहैं॥जातेहोइप्रकास॥धृ॥गीतव
॥॥वक्तुपकवहुंनहोइहोरसों॥निकटिवरती
नितिही॥तहसदासनमुपरहेश्रीगै॥हथजोरैच
त्यहा॥पलुएककवहुंनहोइअंतर॥दगदगाल
गीरहै॥यहपराप्रक्तिप्रकासपरिचय॥सिष्य
सुनोसडुरुकहै॥॥॥॥दलेंदा॥सेवकसेव
मिल्योरसपीवत॥भिन्ननहाअरुभिन्नसदाह
ज्योंजलवीचधस्यैजलप्यंडसंप्यंडरुनीर
जुदेककुनाहा॥ज्योंदगमैपुतरीदगएकनह
कुहुभिन्नसुभिन्नदिषांहां॥सुंदरसेवकभाव
चालसदायहप्रक्तिपरापरमात्ममाहां॥॥॥॥
कृप्ययहंदा॥श्रवनविनाधुनिश्रुनय॥नैनवि
निहारय॥रसनविनाउच्चरयाप्रशंसावहुवि
स्तारय॥नत्यचरनविनकरय
लवजावै॥अंगविनामिलिसंग

बढावै विनु सारन वै तहं सेव्य कौं सेवक जा
पलीये रहै मिलि परमात्म सौं आत्मा परा प्रति
सुंदर कहै ॥ १ ॥ सेव्य कौं जाई कै
सुख सौं मिलै येक सौं होइ ये एक है ना मिलै अ
पनौं जावदा सत्य कहा डै नही सा परा प्रति है
जाग पावै कहै ॥ २ ॥ मिलै
ऐक शंग नही भिन्न अंग करै यों विलासाध
रै जावदा सा ॥ ३ ॥ ज्यों मृगत
लाधु पमजारी एक मेक अरु दास तन्यारी ते
ही स्वामी सेवक एका सुख विलसै यह भिन्न वि
वैका ॥ ४ ॥ हरि मै हरि दास विलस
श करै हरि सौं कवहन विहो ह परै हरि अह
य त्यों हरि दास सा रस पीवन कौं यह है ना
व्युदा ॥ ५ ॥ तेजो मय स्वामी तहा
सेव कहं तेजो मय तेजो मय चरण कौं तेज

सिसनावइ तेजो मय सव अंग तेजो मै मुखारव्यंद
तेजो मय ने नन निरषिते ज भावइ तेजो मय मय
प्र संश करे ज मुख तेजो ही की रसना गुनान वाद
गावइ तेजो मय सुंदर क भाव पुनिते जो मय ते
जो मय भक्ति को तेजो मयावइ ॥ ५५ ॥ दोहा ॥
त्रिविधि भक्ति लक्षण कहै उ त्तम मधिक निष्ठा
उनहि सिष्य सदांत यह उ त्तम भक्ति गरिष्ठ
॥ ५६ ॥ इति श्री सुंदरदासेना वेरचितः ज्ञान समुद्र
उद्गता मध्यामांका निष्ठा भक्तियोग सिद्धांत ना
मोदितिया लल्ल सा ॥ १ ॥ सिष्य उवाच ॥ चो पश्चुं द
हे प्रभु नवधा कहा कनिष्ठा प्रेम लक्षण मध्यम
पक्षा परा भक्ति उ त्तम सुवर्णांनी ॥ एती नो मै नी के
करि जानी ॥ १ ॥ अव प्रभु जो ग सिद्धांत सुनावहु त
के अंग मोहि समझावहु तुम सरव ज जेतहु स्वा
मी कहु कहु या करि अंतर जांमी ॥ २ ॥ श्री उवाच

बढावै विनु सानवै तंह सेवकों सेवक
लीये रहै मिलि परमात्मसों आत्मा परा प्रति
सुंदर कहै ॥ १ ॥ सेवाकों जहि कैद
सुख सै मिलै येक सो होइ पै एक है ना मिलै अ
पनों जावदा सत्त्व दै न ही सा परा प्रति है
जाग पावै कही ॥ २ ॥ मिलै
ऐक शंग न हो प्रिन्न अंग करै यों विलासाध
रै जावदा सा ॥ ३ ॥ ज्यों मगट
लाधु पमजारी एक मेक अरु दास तन्यारी ले
ही स्वामी सेवक एका सुष विल से यह चिन्न वि
वेका ॥ ४ ॥ हरि मेहर दास विल
श करै हरि सों कवहु न विच्छो ह परै हरि अह
यत्यों हरि दास शायर सपीवन कों यह है ना
व्युदा ॥ ५ ॥ तेजो मय स्वामी तह
सेवक हं तेजो मय तेजो मय चरन कों तेज

सिद्धतावश तेजोमयसवअंगतेजोमैमुधारव्यंद
तेजोमयनेनननिरषितेजभावईतेजोमंवेद्यक
प्रसंशकरैजमुखतेजहीकीरसनागुनानवाद
गावईतेजोमयसुंदरकभावपुनितेजोमयते
जोमयचक्रिकौतेजोमयावई॥५५॥हेहाकुंद॥
त्रिविधित्रक्तिलक्षणकहेउत्तममधिकनियु
उनहिसिष्यसहांतयहउत्तमचक्तिगरिष्य
॥५६॥इतिश्रीसुंदरदासेनावेरचितःज्ञानसमुद्र
उत्तमप्रमाणनानेनचक्तियोगिहांतना
मोहतिथ्यासज्यउवायईकुंद
हेप्रभुनवधाकहाकनियुप्रेमलक्षणमध्यस
पद्यापराचक्तिउत्तमसुवषांनी॥एतीनोमैनीके
करिजानी॥१॥अवप्रभुजोगसिहांतप्रनावडत
केअंगमोहिसमकावडतुमसरवजजंतकुत्वा
मीकडकुयाकरिअंतरजांमी॥५७॥

तैसा प्रकृष्टो चाहिकरि योगसिद्धंत
प्रसंग तोहिसुनां वौहेतसौ अष्टयोगके अंग तिन
के अंतर भूतह ॥ मुडाबंधसमस्त नाडी चक्रप्र
वर्णवौहेतरेहस्त ॥ १॥ ॥ प्रथम अंग
जमकहौ ॥ इसरे निमवताज ॥ त्रितिय सुआसन
॥ सुतौ सबतौहिसुनां ॥ चतुर्थ प्राणायाम ॥ पं
चम प्रत्याहार ॥ षष्ठ सुसुनिधारण ध्यान सप्तम वि
स्तार ॥ पुनि अष्टम अंग समाधि है ॥ त्रिन्न त्रिन्न स
माश्रौ ॥ अवसावधान है सिधिसुनिते सबतौहि
सुनाशौ ॥ १॥ ॥ दोहा ॥ दस प्रकारके जमक ॥ द
श प्रकारके नेम ॥ ज्ञय अंग पहिलै सधाहित वया
कैकैके ॥ १॥ ॥ प्रथम नीवटकी जिये ॥ तव ऊपर
विस्तार ॥ महलाशति जुडि गेनही त्यों जमनिय
मविचार ॥ १॥ ॥ अथ जमनियमा ॥ १॥ ॥ प्र
थम अहंसा ॥ शत्य हिंसा निराजानि स्तेय सुत्या

वृक्षचर्यदृढग्रहेष्वहमाधितसाश्रितुरा
मेददयावडोगुनहोई॥ अर्जवरुहदयशुआने
मिताहारपुनिकरै॥ सोचनीकीविधिजा
नै॥ १०॥ एदस्यकारकेजस। कहे। हठप्रदीपकाग
मेहि। सो पहिले होइनकोग्रहे। चलतजोगकेपं
थमहि॥ ११॥ अ॥ एजसतिहं यप्रयमजतिम
मालकरा॥ विहाहंदा॥ मनकरिदोषनकीजिये
वचननलावैकर्म घातनकरिये देहसोइहेअ
हंसंघमि॥ १२॥ अ॥ एजसतिहं यप्रयमजतिम
सत्यसुदाइप्रकार। एकसत्यजाबोलियेमिध्या
सवसंसार। दुसरसत्यशुब्रह्महै॥ १३॥ अ॥ एजस
तेवलहं॥ १४॥ अ॥ एजसतिहं यप्रयमजतिम
हेस्तेयो॥ चोरीहोप्रकारकी
सवहिवषंते। मनकीचोरीमनही।

ब्रह्मचर्य
इतिनांतिनलोविधिपालिए कामअष्टयुकी
रमहीकरिगालिये। बांधिकाछट्टवीरजतिन
हिहोइरो। औरबातअवनाहि। जितेदिकोइरे
ना। रैसमनेअवनपुनि। इष्टिनाषणहोइगुह्य
वारताहास्मरति। बजुरिसपरसयकोइ
सिषसुनहि। यहनेदमैयुनअष्ट
प्रकारतजि कहैमुनीस्वरवेदब्रह्मचर्यतब
जानिये। सहनताकहौसबलोमै
अवशुनहि। सिमोसो। सहनताकहौसबलोमै
दुष्टदुष्टदेहिजो नारी। दुसहमुखबचनपुनि
गारी। कदेनहिदोनकोपावे। उदधि महि

अश्विबुद्धिजोदे। वडूरितनजासदेकोउ। दमा
करिसहेयुनि सोऊ॥ धृष्टा धृष्टतिलकाया॥ १६
वदलेंद॥ धीरजधारिरहेउरअंतर॥ जोउषदे
हहिआइयेरेजू। वेठतउठतबोलतांधीरजसै
धरपावधरेजू। जागतसोवतजीमूतपीवत
धीरजंधहिजोगकरैजू॥ देवदयंतहि नूतहि
तहिकालहुसोकवहुनडरेजू॥ १७॥ अथद
लका॥ ओठकहंवा॥ सबजीवनिकेहितकीजुक
हेमनवाचकजाकायदयालुरहे। शुषदायक
समर्जनायलियो। सिष्यजानिदयानिरहिये
॥ १८॥ जोपूइयाहंदा॥ यहकोमलहृदयरहेनि
वासरबोलेकोमलबानी॥ पुनिकोमलदृष्टिनि
होरेसबकोकोमलतासुखदानी॥ ज्योको

मिकरेनीकीविधबीजवृद्धिहैआवेत्योकरहे
आजवलकएसुनिसिष्ययोगशिडिकोंपा
वाएअचामितालालबपपरद्वाराजे
सातिकअन्नखकरेअन्न अतिमधुरसचिक
एनिरथिअन्न तजिभागचतुरथयगहेसार
उनिशिष्यकह्योयहहिताहार॥२५॥
रियोप्रत्यकाजलकरिवपुमलाहरिये रागा
दिकत्यागेहदे सुहं सोचउत्रैविधिजांनिप्र
बुद्धि॥१॥ दशप्रकारयेजमकहे प्रय
मयोगकोअंग दशप्रकारअवनियममुनि॥
भिन्नहिभिन्नप्रसंग॥२॥ अष्टनिष्ठाहिगण्यहं
दातपसंतोखहिग्रहे बुद्धिआस्तिकिसुआनय
दानसमाधिकारिदेश मानसापूजाठानयावच

नसिद्धांतसुशुनयः॥ लाजमृतिदृढकरिराषय
जायकरैयप्रसमौनातहालगवचननप्र
षयपुनिहोमकरैहिविधितहां जैसाविधि
सकुरकहे॥ एदशप्रकारकेनियमहै॥ आग्य
विनांकैसैलहै॥ ॥ २२ ॥ सुदं गतमकाल ज्ञाण॥ पा
यकां हं ॥ सबसपरी रूपतज्ञाण॥ त्यांरस
गंधनोही जज्ञाण॥ इदियस्वादं त्रै सै रहणं सो
तयजाणनितं मरणं॥ ॥ २३ ॥ अथ संतोषविषय
॥ ॥ ॥ २४ ॥ देहकोपारध्वाश्वापैरहै
कल्पनाकाडिनिश्चंतहोई॥ पुनियथा ला
जको वेदमुनिकहतहै॥ परमसंतोषशिष
जांसोई॥ ॥ २५ ॥ अथ ज्ञातृकतौल्यद्वयानि
वैयक्तिकं शास्त्रवेदपुरांनकहतहै॥ शब्दब्र
ह्मकोनिश्चयधारिपुनिगुरुसंतमुनावत

होई वारवार शिष्यता हि विचारि होई कि नहि
तो न प्रमति आनि नहि अप्रतीति हृदय तें टारि क
रे विस्वा सप्रतीति विआनि उरि यऊ जास्ति
बुद्धि निरधारि

दान कहत है उन्नय विधि सुनिशि
षकर हि प्रवेस एक दान कर दे जिय एक द
न उपदेस एक दान उपदेस सु तो ए मो घे हो
ई दसर जल अरु अन्न वस्त्र करि पोषे कोई पा
त्र कुपात्र विशेष भली नूनि पजय धानं सुं
दर देषि विचारि उन्नय विधिक हि र दानं
तो स्वा मी

संगा देव अन्नंगा निर्मल अंगा सेवे जू करि जीव
अनूपो याति पुष्प गंधंध पंथे वै जू नही की आ
सा कटे पासा इति विदा सो निःकां प्र शिष्य असे

मेई वारवार शिष्यता हि विचारि होइ किनह
सोच प्रतिआनहि अप्रतीति हृदय तें टारि क
रिदिस्सा सप्रतीति दिआनि उरि यऊ आस्ति
बुद्धि निरधारि

दान कहत हैं उन्नय विधि पुनि शि
ष्य करहि प्रवेस एक दान करद जिय एकदा
न उपदेस एक दान उपदेस सु तो पमो यहो
इह सरजल अरु अन्न वस्त्र करि पोषै कोई पा
त्र कुपात्र विशेष प्रलीन नियजय धानं सु
दर देषि विचारि उन्नय विधिकहि रदानं

तौ स्वामी
संगा देव अंगानि मेल अंगामे वैजू करि जीव
अनूप पाति पुष्प गंध धूप ये वैजू नही को आ
सा कटे पासा इहि विदा सानिः कां मं राष अं स

ज्ञानयनिष्ठयज्ञानय॥ पूजादोनयदिनजाम
॥ १२॥ अथ सिद्धांतप्रवणकोलवृत्तकुडलियाहं
दावानीवडतप्रकारहै॥ ताकोनाहिनुअंतजोह
अपनेकामकी॥ सोशुनयसिद्धांत॥ सोशुनय
सिद्धांतसंहं॥ संतसवप्रापतवोश्चिह्नअनि
कैठोर॥ शुनयनितप्रतिजेकोह॥ यथाहंसपय
पिवैरहैज्योकोत्योपांनी॥ असेलेहुविचारिशि
ष्यवहुविधिहैवांनी॥ १३॥ अथहीकोलवृत्तकुडलियाहं
मरहोहालजाकरैगुरसंतजनकीतोसरेसवक
जतनमनहुलावेनाहिअपनों॥ करैलोकहुला
ज॥ लज्योकरैकुलकुटवकी॥ लंकुनलगावेना
हि॥ शिलाजतैसवकाजहोह॥ लाजगहिमनमा
हि॥ ३०॥ अथमतिबोल्हदणमुदवाहंदा॥ नानां सु

पूजामानि वडाई आदि निदा करै आइ कै कोइ या प्र
कार मति निश्चल जाकी सुंदर दृढ मति कहि रस
जायान्त्य
प्रतधारि करै मुख मोन सों एक दोइ धटिका जुग
है मन पौन सों जो अहिक ककु होइ वडो अति जा
गहे सिष्य तौ हि कहि दी नू ज लौ यह प्राग हे
अव हो म उ प्रै य
प्रकार शुनि सिष्य कहौ तौ हि वषा नि श्कत्र नि मति
साकि लि हो म सों प्रवती जा नि जो न व ती यि जा
सु होइ तौ हि और नषो म सो जान अग नि प्रजालि
नी कै करै इडि य हो म
स प्रकार वै ज म कहै दस प्रकार ये ने म योग ग्रंथ
मा हे लिखे मै समुझा रते म
सुना रते तौ हि उन्नय अंग रंजो ग के सावधान अक्
न हो हि अव हि षडंग वषा नि हो

प्रथम कहें सिष्य आसन भेदा जातै रोग मिटहि
ब्रह्म वेदा रुषि मुनियोगी वत्साराधेति निसव्यह
ली आसन साध ॥ १ ॥ त्रोटक ॥ सिव जानत है
सव जोग कलानित सग सिवा पुनि है अचला दृढ
आसन ते नही व्यंडिषे दृगदेष तदपति लोग हं
॥ २ ॥ नमस्तुभ्य नित्य ॥ चतुरासी लष जीवकी ज
ते कहतु है वेद तित नहि आसन सवै जानतु है सि
व भेद जानतु है सिव भेद और जानतु नही कोई
आपट्ट्याति न करी सुगम करि दीन्हें सोई ललल
हम हिर के एक काटे दुषंसा पुल प्रसव निकों क
र पुगट आसन चतुरासी ॥ ३ ॥ सोई कहें चतुरासी अ
न निमै सार सुत है जानि सिद्धा अष्टपदमासन हि नि
कै कहै वषांनि ॥ ४ ॥ तन निज ॥ ५ ॥ पलन ॥ ६ ॥ द
॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
ते कहें च वा जो निठौर ताहि निषं क

तैसैंहीयुगतिकरिविधिसोंचलैप्रकार मेइहके
उपादिद्वनपावअनियें सरलसरारदृष्टइइय
संयमकारअचलउधइहिचूकेमध्यनानिंरें
मोक्षकेकपाटकोउधारतइस्यमेवसुंदरका
तसिधआस्रवषांनिंरें
इहउरउपरपप्रथमवांहिपगआन
यवांमहिउरिउपरयतवहिदृष्टपाठान
यदोऊकरपुनिकेरिपविपीकैकरिआवरें
दृष्टकैगृहेअंगुष्ठचिवुकविठिस्थललाव
इहिनातिदृष्टउतनेषकरि॥अग्रनासि
गधिदे॥अबवाधिहरणजोगीतकी॥पद्याअ
यहनांषिर॥पदजेहं॥सिषआरजुआस
नहरहिरोग॥परिइतदोइआप्तसंधेजोगाता
तैतयहयउतैसाधि॥जवलगपकुचेनिर

वसमाधि॥६॥ यां च यद्राणं साधनां विजुं यत्नं
यां ज्योतिं कीजे द्राणं या मां नाडी चं कं या वे ठा
मा पूर रा धे रे वे को इ है नि या यं जो जी सो इं ॥६॥
या नाडी कही अनेक विधि है दस सुष
विचार इडा यं गुला सुष मणः ॥ सब महि ए
न य सार ॥७॥ द ह या या ठे ॥ वाम इडा सुर
जानि चं इ पुनिक मे ही सत ता को ॥ द ह ए स्वर
यां गुला ॥ मूर म य जान कु ता को ॥ मध्य सुष म्ना
बै है ताहि जान त न हि को इ है यह अ ग्रे स्वर
य का ज या ही ते हो इ ज व इ डा यं गुला गति थ
के द्राणं या म ध ना व तै ॥ त व च ले सुष म्ना उ
ल टि कै ॥ सुष उ यं जे ध रि आ व तै ॥८॥ वा वे ॥

दस प्रकार को पवन है॥ नाथों तिहू के नाम॥ क
हे चिनां नदी जां नियो किं न ठौर विष्णु म
प्राण प्राण समान हि जां नैवा नो दां
त पंच मन मां नै नाग हू कर्म कल मु कहिये
देव दत्त मु धन जय लहि पा
प्राण हृदय महि वसि है॥ गुद मंडले अप
ना ना निसमान हि जां निरा॥ कंठ हिव से उ
लना कंठ हिव से उदान व्यान व्यापक घट सा
र॥ नाग कर यउ दगार॥ कर्म सोय ल क उधा
र॥ क कल मु उ पजे क्षुधा देव दत्त हि जना ए॥
मू ये धनं जय रहै॥ पंच पूब सो प्राण॥ धेवा
निना कल क चक्र अनुक्रम कहत है॥ प्रुति

सिषतिनकेनासायीछेताहेसुनारहा॥बोध
सोयाणायासा॥धेण॥अचवकज्वनुजसा॥यह
जुछंद॥सिषप्रथमककआधारजानितहअ
क्षरचारिचतुरदलानि॥पुनिबसषसवर्णवि
चारिलेऊहेसबसरीरआधाररकु॥१॥पुनि
स्वाधिष्टानसुदुतिचका॥तहषट्दलषट्दुअ
क्षरअवकागतिवत्तेवरलववर्णमध्या॥सो
सवृत्त्यचंककहिरयसिध्या॥रा॥मणिपूरच
कदसदलप्रजावापुनिअक्षरदसतेउसुना
वा॥तहडुटणातथदधनयफप्रमान॥इनिव
र्णसहितत्रितिखषानि॥२॥अनुहातच
कहेहृदयमांहा॥दलअक्षरद्वादसअधिक
ताहि॥कखगघङ्गचकजुरुत

मिषचक्रचतुर्थियसमुद्दिहेतु सुनिपेक्ष
मचक्रविमुधआहिदलयोसमश्चरलगे
ताहि॥तहआदिअकारअकारअंतसेनपाड
राखरताकेगनंत॥अवआज्ञाचक्रसुभूव
मेजारे लपिहेदलदैअहरविचारिताहहं
वरणअतिअनूय यहषष्टसुचक्रकह्योस्वरु
पाविजवइनिषटचक्रहिनेदिजातवउहैशु
षमासुषसमाताहीतेंप्राणवामसारशुनि
सिद्धकह्योतौकौविचारा॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥
इडानाडिपूर्वकरेकुंज
करावैमाहिरेचक्रकरिरेप्यंगलासबपाति
गकरिजाहि॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥
तपोडसपूरकपूरिरेचवसठिकुंजकउना
हादिंसतिकरिरेचना॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥
रिदिपर्ययत्रैसंधारेपूरिप्यंगलाइडानिका

रै कुंभकराविष्णुको जीतै। चतुरवार अञ्जा
सव्यदीतै॥ ५॥ पा मरुदंदा यह तपिन उरु सुन
इयै। ह त्रांति प्राणायाम। स डुर क्लिया तें पाश्च
मन होइ अति विश्राम। अवमत प्रतांत र कहें त
हो। पुनि सिष्य अन्य प्रभाव गोर ह उरु वषा नि
होति हि सुनत उ पय यज्ञाव॥ गो र उरु॥ चय
८॥ सोहं सोहं हं सो सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं
सोहं सोहं जापें। सोहं अ पै आयें। हादसम
त्रा पुरक कणें। हादसमात्रा कुंभ कंधणें। हादस
मात्रा रेचक जाणें पूर्व वत सु विय र्ये वटाणें।
अधम हादसमात्रा उक्तं मध्यम मात्रा हि गु
ण युक्तं उत्तम मात्रा त्रिगुण कहिरे। प्राणया
म मुनि र्णय लहिरे। हादसमात्रा कुंभक
अष्टसु विधि मुद्रा दश हि प्रकार की बंधती नि
तिन मधि उत्तम साधन जोग के॥ ६॥

सूर्यचरनप्रथम इति
त्रिकर्णं सातकार्युनित्रितिय सातली
अञ्जार्हिकहिरे सातकार्युनित्रितिय सातली
चतुर्थग्रहिरे पंचमहेतुस्त्रिकाञ्जपरिषदसु
जानंऊतुर्कनासप्तम अष्टमंकेवलमानऊ र
कुलकअष्टप्रकारके होश्यवनक्षत्रोर्धनं तवमु
डाकेधलगावहि प्रथमकरैघटलोर्धनं
नाददसप्रकारकीधुनिसुनहि कुटहिसत्कल
विषादा प्रथमत्रमरगुजार संषधु
निडतियकहिजै त्रितियवजहि मजंदंग चतु
र्थतालसुनिजै पंचमघंटानादा षष्ठीबीनाधु
निहोई सप्तमवजहि नेरि अष्टमंडुदनिदोई अ
वनोमै गजै समुद्रकी दसममेघघोषहिगुनै
कहिसुंदरअनहदनादको दसप्रकारजोगीउ
नै

पुद्गलमहाबंधहः महाबंधचपेनरी उडिया
नबंधसुमूलबंधहः बंधजालंधरकरी विप
रीतिकरणपुनिवजेलीसुतिचालनकजि
येश्महोश्योगात्ररकाया ससिकलनितप
जिये ॥ १ ॥
प्रवणसबको गहतहेनगहतहेरुपागंधग
हतहेनासिका ससनास्तक चपरसनारस्तक
पतुचास्यरसहिचोहऽनियेचनको फेरिआ
त्मानित्यत्राहे कः मंत्रगहिगुहः किरापरवि
समिटेडवणः शमकरिप्रत्यहारविषयसच्चादि
दिकप्रवणः ॥ २ ॥
कोणलकारहियुक्तेजानइयय्यरुपेपुनपी
तवणहदिमंडलकहि विविधकृतेजान
अनूपं तस्यदिक्कापेचप्राणकारिजन
संनिवहोऽहनि सिष्यअवनिजय

सूर्यदेदनपृथम हिति
कुंचकनांम यज्जाहिकहिरे सातकारुनिनितिय सीतली
चतुर्थग्रहिरे पंचमहेत्रुखिकाचांपरीषदसु
जानंडापूर्वनासप्तम अष्टमकेवलमानडार
कुंचकअष्टप्रकारके होश्यवनशरोधनं तवमु
डावेधलगावहि प्रथमकरैघटसोधनं
नाददस्यकारकीधुनिसुनहि कुटहिसत्कल
विषादाचार्यप्रथमत्रमरुजार संवधु
निडुतियकहिजै त्रितियवजहि मज्जदंगचतु
र्थतालसुनिजै पंचमघंटानादाषष्ठीबीनाधु
निहोई सप्तमवजहि नेरिअष्टमंडदमिदोईअ
वनोमैगजैसमुडका दसममेघघोषहिगुने
कहिसुंदरअनहदनादकौ दसप्रकारजागीसु
नै

मुद्रामहाबंधह। महावेधंचपेचरी उडिया
नवेधसुमूलवेधह। वेधजालंधरकरी विप
रीतिकरणपुनिवजोली सति चालनली जि
येश्महोश्योगा अमरकाया। ससिकलानितप
जिये। दया। अय। त्या। क। अलिया। द।
अवणतब्दको गहतहेने गहतहे रूप। गंधग
हतहेनासिका। रसनारसको चंपरसनारसकीच
पतुचास्यरसहिचाहे। निपेचनूको फेरिअ
त्मानित्यअराहे। कुं। मंगहिगहे। किरं। एरति
समिटैइवण। शमकरियत्याहारविषयसब्दादि
दिकप्रवण॥१०॥

यहचार
कोएलकारतियुक्रंजानइलुध्द। रूपं पुनपी
तवणतदिमंडनन। तिर विधि। अ। अ। त। तु
अनूपं तदध्यादिकापंचप्राणकारिना। चित
स्थजनतो। तनि। सिप्य। अ। न। जे। अ। कर। नि।

हो नमिधारणसेई ॥ यजुषात्तु ॥ १५ ॥
अक्षरवकारसंयुक्तजानिजलचं
इषंजनिरधारं पुनिरुषीकेसंक्रितं सो
तकंठपारदाकारं तहघटिकापंचप्राणकरि
लीनंचित्तधारिकरिरहिरा विषकालकूटव्य
पेनहिकवह्ना वारिधारणकहिरा ॥ अथ
रागआभासे पुनिइंदोपडतिमध्यतालुकाक
हियतडनिवासं तहघटिकापंचप्राणकरि
लीनं ग्रंथहिउक्तवषांनं सुनिशिष्यअग्रिजयहेत
कहिरा तेतधारणजानं ॥ १६ ॥ अथ
राग ॥ सुवमध्यकारसहितपटकोणं त्रैसील
हिविचारं पुनिमेघवरणं स्वरकरिअंकित
वारंवारनिहारं तहघटिकापंचप्राणकरि
लीनं तैचरासिधिहियावे सुनिसिष्यधारणव

यतलकी॥ जौनी वै कखि वै॥ ५॥ अथ यत्
 सतलकी॥ ६॥ अथ यत् सतलकी है सु
 अथ यत् लाकारे॥ जहनि अथ जानि सदा सिवति
 मृति॥ अथि रसहित हकारे॥ तह धटिका पंच प्र
 एक रिलानं यर्म मुक्ति दी दता॥ सुनि सिध धा
 रण व्यो मतलकी॥ जोग ग्रंथ दिख्याता॥ ७॥ यह
 एक थ चीना एक डा विणी॥ एक सु रहिनी कहि
 प॥ पुनि एक अमि ए एक सो विणी॥ सडुरु विन
 लहि प॥ पंच तलकी पंच धारणा॥ तिन के ने ह्य
 नाये॥ अथ अगे ध्यान कहं वड विधिक रिजोग्रंथ
 निमहि गारे॥ ८॥ अथ ध्यान वन न॥ दोहा कदा प्रथ
 महि ध्यान पद स्थ है॥ डितिये प्यंड धीत॥ त्रितिय ध
 न रुय स्थ युनि॥ चतुर्थ रुपा तीत॥ ९॥ प्रथम पद
 स्थ ध्यान वर्तत॥ जे पद चित्र विचित्र रचे अविष्ट
 महाय मीर्थ जामे॥ त अला को व च

धरेनिहचैकरितामैं कैकरिकुंभकमंत्रजपैऊर
अक्षरतेपुनिजानिअनामैं सुंदरध्यानदस्यहै
मननिहशूलहैशूलहैजुविरामैं अथप्यंड
स्यध्यानवनेन पुनिसिषकहोंध्या
न प्यंडस्य प्यंडसोधनंकारस्स्यं षट्चक्र
निकौधरिरेध्यानं पुनिसडुरकोध्यानप्रमानं
पस्यध्या निहारि
केंत्रिकूटमाहिविस्फुल्यंगदेविहै पुनःप्रकासद
पजोतिदीपमालपहै नहत्रमालदिजुलंप्र
पतत्रहैहै अनतकोदिसूरचैइ ध्यानमध्यजोइ
है परीचिकासमानसुअओरलहजानिरं गुल
मलंसमस्तविस्वतेजमेवपानिरं समृद्धमध्यजि
केंउधारिनैनदीजिरे दसौदिसाजलापरप्रत्यह
ध्यानकजिरे रुपातीतध्यानन
यहरूपातीतजुसंन्यध्यान ककुहपनरख
नैविदोन तहअष्टप्रहरलौचितलीन पुनिस

तसवसाधिसाधुपदनां हि न निर्देयः अहंकारनिहि
लेऽमहान्नसवानेऽसुरदिजयः शिष्यपरम्यवि
चारिजगतमहिसोऽगुरुकिजयः ॥ १ ॥
॥ सदाप्रसन्नश्चावपुगटसर्वोपरिराजयः ॥
॥ सज्ञानविज्ञानश्चलत्कृत्यविराजयः सुख
निधानं सर्वेण मानश्च यमानं न जानैः सारासा
रविवेकसकलमयथाऽत्रममानैः ॥ पुनिनिद्यते
हृदि पंथिकोऽस्ति द्योते सवसंशयः ॥ कहिसुंदरस
सदुरसही ॥ चिदानंदधनचिन्मयः ॥ ॥ यत्तु गत
॥ ॥ शब्दब्रह्मपरब्रह्मप्रलीविधिजानैः ॥ पंच
तत्त्वगुनतीति मया कुरिमानैः ॥ बुद्धिमंतसुख
सतकहैगुरसोऽरे ॥ श्रीरठोरसिषिजाश्च मे म
तिकोऽरे ॥ ॥ नंदे ॥ ॥ वृत्तीभूतश्च वस्थाजा
महिहो ॥ सुंदरसोऽसदुरजानैको ॥ ॥ ॥

मेरे गुरुओं आश्रम करे कर जो रिकें शिष्य
मुक्त हो जाय संशय का उन्नाह
घोजत प्रोजत सङ्कर पाया
चूरि भाग जागो शिष्य आया दषत दष्टि नये अ
नदा यहतो कृपा करी गो वंदा
रको दरसन दषता शिष्य पाया संतोष कार्य मे
रो अब नये मनमहिमानो मोष सी शना श्कर जोरि
शिष्य प्रप्रा र्थना करी हे प्रभू लीज यक्षोरि
अज्ञेदान गुरदिजिये कृपामोहि कांजि
हो देव स्वामी अहं अज्ञ कांमी कृपामोहि कांजि
अज्ञेदान दीजे बडे भाग्य मे रलह अंधितेरे
तुम देवि जीजे अज्ञेदान दीजे प्रभू हां अना
शाग हो मोर हाथा दया के अनकी जीजे अज्ञेदान

वधान्कैत्रतिप्रवीनः जिमपेहीकीगतिगगन
माहि कहुजातजातदिठिपरैयनांहि पुनिआ
इदिवाइइदेतसोइवाजोगीकीगतिइहेहोसिइ
हिस्सुन्यनसमओरनांहि॥उतकुहुध्यानसव
सवध्यानमाहि॥हेसुन्याकारजुब्रह्मअ
पु।दरहुंदिरापुरणअतिअमापु॥॥जोकरै
यध्यानसाज्योजहोशतवलजैसमाधिअमंड
सोह॥पुनिउहयोगनिडाकहाय पुनिसिष्य
देउंतोकोवता॥॥॥अथसमाधिवने
न॥॥गोतकहुवा॥पुनिसिष्यअवाहिसमाधिलह
ण॥मुक्तयोगीवर्ततेतहसाधपसाधकरैकह
॥॥कियाकर्मनिवर्तते॥निरुपाधिनित्यउपा
धिरहित॥इहेनिश्चयमानिये ककुमिनुमा
वनरहैकोउसासमाधिवषानिये॥॥नहोसी
तउल्लहृद्या॥॥नहामृक्याअलसरहे॥

होजागरननहिमुप्रासुप्रमितत्यदंयोगील
हेजिमनीरप्रहिगलिजाश्लवनं॥ एकमेकहि
वांनिये कहुनिनप्रावनरहेकोऊ सासमाधि
वषांनिये नहिहर्षसोकनमुखंडखनहींमा
नअमानेयो पुनिमनोइंदीवतनयं गतंजान
अयो नहिजातिकुलनहिवर्णआशुप्रजीववृक्ष
नलजानिये कहुनिनप्रावनरहेकोऊ सासमा
धिवषांनिये ॥ ३ ॥ नहिसबस्परसरूपरसनहि
गंधजानयरंकरु नहिकालनकर्मप्रजावहे
नहिउदयअस्तप्रयंचरु ॥ जिमहीरे अज्यअज्ये
जलेजलहिमिलानिये कहुनिनप्रावनरहेकोऊ
सासमाधिवषांनिये ॥ ४ ॥ नहिदेवदयंतपिसा
चराहसहतप्रतनसचरे नहियवनपानीआ
निनयपुनिसर्पसंधहिनाडरे नहिजनमंजन
सद्वलागाहि यहअवस्थागानिये कहुनिनप्रा

वनरहेकोज॥ सास्माधि वषानय॥
 दोहा॥ योगसिद्धांतसुनाश्योअष्टअंगसंयुक्त
 यासाधनब्रह्महिमिलैतैऊकहियेमुक्त॥
 सुंदरदासेनारंचितः ज्ञानसमुद्रअष्टअंगयोगसिद्धांत
 नम्रचितियोल्लास॥ सासिष्यजन्मजा॥ जैपईकुंदहि
 प्रभुवहुतकयातुमकान्ही॥ असीबुद्धिदयत्करिदीनी
 मोको॥ योगसिद्धांतसुनायो॥ योपूछोसोऊतरपा
 यो॥ अष्टप्रभुसारखसुमोहिसुनावहु॥ परेस
 वसनेहमियावहु॥ यहुगुरुदेवकयाकरिकहिये
 ॥ तुमविनओरकहोकतलहिये॥ सा॥ श्रीगुरुदास
 यो॥ सोरठाकुंदा॥ शिष्यकहेंसमऊशजोतैपूछो
 प्रीतिसो॥ सारखसुदेजववताश॥ तसुनिवैकोजो
 गपहै॥ राजा॥ सारखजोगवजना॥ इतिनाकुंदासुनि
 सिष्यहैमतसारखहिकोजुअनात्माआत्मभिन्नक
 रैआत्महैयउरूपलियेनितआत्मचेतनभावधरे
 ॥ अनआत्मसहस्रपूलसदायुनिआत्मसहस्रपूल
 ज्ञान

वस्य सज्जु रूप रसांघ पंचगुण अवनि है सि पि
है अनुकु मजानित सांख्य सुमत असे कहै
यह कहि सुत्र
वश्वनिके कहिये आवक उदक हिजान्द्रा पुनि
उल्लसु नाव अग्नि महि वरत य। चलन पवन पहि
चंद्र आकास सुनाव बुधिरु कहियत है पुनि अ
वक शल पादै। पंचतल के पंच सुनाव हि स
रु दिना न पावै। अथ राजस अहं
कार त उपजाइ राइ य सुवतां पुनि पंच बाय
तिन के समीप ही यह वौ रौ सम कां। अरु निनि
निनि हैं क्रिया सुतिन की। निन्न निन्न है नाम सु
निशि। अफहो नीकें कारितो सो। ज्यो पावो वि
मं। अव एतु चा डिग घा एर स
न पुनि तिन के संग। जान सुइय पंच जेई अ प
य नै रगा वाक्य पानि अरु पाइ उपस्य गुह कहि

एकस्मिन् सुइदिय पंचमाला विधिज्ञाने रहिरे सु
नियमाण पाने देव्या नोदान सुवायु हे दसपंचर
जगुण ते जये क्रिया शक्तिको यस्य हे

अथ सात्त्विक भुंक्तारं मन्यु द्विचिंत्य हंजर
मुनि इति नवकृति स्मृता देवता बह्विधं रहिण
लभ्यते तत्र कं अस्मिन् निवर्ण जान सुइदिय पुनि
गि इति उद्यं इति त्रजु प्रगायनिक मंडिव

सा सा विधि अरु कं त्रजु पुनि रुइति तपस्वि
नि भए चतुरदस देवता जान सा क्रियुत जानि
इति सात्त्विक भुंक्तारं

हे त्रजु ए मय तम रजस त्व स एह इति करिष्ये इत्यु
ल्लो इति करिष्ये देह कारण देह सुती
ल्लो सरो सब को कारण मूल ताहा ते दोऊ भए सु
इति देह स्युल ॥ १७ ॥ अथ त्रजु पुनि रुइति तपस्वि
नही को वरण एक तल महि

पंचपचीससुनां ३ स्थिअवनितकूउदकदि
जानऊं मोराअग्निनीकोपहिचोनऊं नाडीवाय
रोमआकासपंचअंसपृथ्वीजुपकासं मेदसु
अवनिमुत्रजलकाहिर रक्तअग्नियहजनैरहिर
सुक्तसुवायस्तेष्वधोमं पंचअंसएउदकरामोमं
कृत्यपृथ्वीरटुजलकोअंसा आलसअग्नन
आनऊंसंसासंगमवायुनीक्षत्रजानं पंचअंस्ते
अग्निप्रमानं रोधअग्निचमएजलमाही उध
गमनअग्निमहिआहो अतिनिगमवायपहिचान
ऊं उच्चस्थितिआकाशहिजनऊं नयपृथ्वीम
हादिकनीरं क्रोधअग्निपुनिकामसमीरलोअ
कासंकहिसमऊर पंचअंसएनचकेपार
अथअन्योत्रेदा
गुदाकर्मशंडियनिमहि नासाशंडियजानस्ते
उज्जतेपुगटसिधिलेऊपहिचानि उपस्थकर्म
शंडियनिमहि रसनाशंडियजान रदोउजलते
पटसिधिलेऊपहिचान चर्लकर्मशंडियनि

महि लोचन इंदियज्ञान ॥ एदोऊवसतेप्रगट ॥ सिष
षिलेऊपहिचान ॥ २ ॥ पानिकर्म इंदियनिमहिवरु
इंदियपुनिज्ञान ॥ एदोऊपवनहिप्रगट ॥ शिषिलेऊ
पहिचानि ॥ २ ॥ वचनकर्म इंदियमहि ॥ श्रोत्रसु
इंदीयज्ञान ॥ एदोऊनमतेप्रगट ॥ सिषिलेऊपहिच
न ॥ ५ ॥ २ ॥ अथानिप्रटीनदादादाहंदा ॥ श्रोत्रसुअध्या
त्मप्रगट ॥ श्रोतव्यअधिभूतदिसातत्रहेदेवतयह
रपुटीइहिसूत ॥ १ ॥ त्रुअध्यात्मजानियऊ सयश
हेअधिभूतवायुतत्रपुनिदेवती ॥ यहरपुटीइहिसूत
॥ २ ॥ चहुअध्यात्मजानियऊ दसुव्यअधिभूत स
तत्रहेदेवता यहरपुटीइहिसूत ॥ ३ ॥ रसनाअध्या
त्मप्रगटसगहणअधिभूत ॥ वणितत्रहेदेवता यह
पुटीइहिसूत ॥ ४ ॥ घ्राणसुअध्यात्मप्रगट ॥ घ्रातव्यअ
धिभूतअस्मिन्हेदेवता यहरपुटीइहिसूत ॥ ५ ॥ इ
तिपंचरां ॥ इंदियरपुटी ॥ वचनसुअध्यात्मप्रगट ॥
वक्तव्यअधिभूत अमितत्रहेदेवता इहि
हिसूत ॥ ६ ॥ हस्तसुअध्यात्मप्रगट ॥

[illegible]

परसंगंधामनश्चरुवाहिवहश्चकाराएनव
तत्तकारनिर्धारः॥१॥॥॥यदेतत्तस्य
लवपुनवततनिकोल्पागश्निचौवीसऊतल
कोवऊविधिकहेद्यप्रसंग॥॥॥॥
सिषएचौवीसतत्वजडजानऊतिनकोहेत्रस
कहिएपुनिचेतनिएकऔरपचीसहि सारखाहि
मतसौलहिएसाहेहेत्रजश्रवकोप्ररकपुनि
साहीवहजानऊ।यहश्रुतिपुरुषकोकीयो
निर्णयसदुरकहैसुमानऊ॥॥॥अथजाग्रद
श्रवस्याकथ्यते॥चंपयाहृदा॥यहदेहस्थूलविरा
टाहैपंचतत्वकोठाटानमवायतेजजलधरणी
पाँऊवऊविधिकरिवराणी॥॥॥जिसवस्परसहि
रूपारसगंधामिलैतिनिजपा॥॥॥नितनप्रात्रिक
सहेता॥॥॥पंचविषयकोहेता॥॥॥पुनियेचेंइ
यज्ञानांश्रवणादिमिलीविधिनांनानांश्रुतकर्म
मुइइययेचावचनादिमिलीजुप्रयंचा॥॥॥
मनबुद्धिचित्तश्रंकारा॥यहश्रुतहकणविचा
रापुनिदेवचतदैशानऊइसवाया

तत्र नृपतिरहरेयः ॥ १ ॥ इति तत्र है
वता यहरपुटीरहितसूत ॥ ॥ चण्डसुत्रध्यात्मप्रगा
तव्यं अधिभूत विस्तृतत्र है देवता यहरपुटीरहि
सूत ॥ ॥ उपस्य अध्यात्मप्रगात्र नंद अधिभूत
प्रजापतिरहितदेवता यहरपुटीरहितसूत ॥ ॥ गुंरा
सुत्रध्यात्मप्रगात्र मलत्यागं अधिभूतमित्रतत्र है दे
वता यहरपुटीरहितसूत ॥ ॥ ॥ ॥ इति कर्मदीप
॥ मनः अध्यात्मजानियुक्त संकल्पं अधिभूत चंड
तत्र है देवता यहरपुटीरहितसूत ॥ ॥ विदिसुत्रध्या
त्मप्रगात्र वौधव्यं अधिभूत ब्रह्मातत्र सुदेवता य
हरपुटीरहितसूत चितसुत्रध्यात्मप्रगात्र चितव्यं
अधिभूत वा सुदेवतहरे देवता यहरपुटीरहितसू
त ॥ ॥ ॥ अहंकार अध्यात्म अहं कृति अधिभूत रुद्र
तत्र है देवता यहरपुटीरहितसूत ॥ ॥ इति तत्र करण
रुद्रव्य ॥ इति स्यात्तदहं वन ॥ अथ लिङ्गसरीरकस्य तै
॥ ॥ नवतल्लिङ्गैः लिङ्गप्रबंधा सदस्य रीति

परसंगंधा मम अतपुष्टि यदत्र हकारा एव
तत्तत्की एनिर्धारा ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ यदहं तत्त्वस्थ
लवपु नवतलनि कोलपंग ॥ इनि चौवी सऊतल
को ॥ वऊ विधिक ह्यो प्रसंग ॥ ७६ ॥ दोहा ॥
सिष ए चौवी सतत्व जड जानऊ ॥ तिन को द्वै त्रल
कहि ए पुनि चेत नि एक और ए ची सहि सांखा
मत सांलहि ए ॥ सा है द्वै त्रज श्रव को प्ररक ॥ पुनि
सा ही वह जानऊ ॥ यह प्रकृति पुरुष को कीयो
नि एय ॥ स डुर कहै सुमानऊ ॥ ७७ ॥ अथ जाग्रद
अवस्था कथ्यते ॥ चंपक ॥ दोहा ॥ यह द्वै ह स्थूल विरा
टा है पंचतत्व को ॥ ठाटा न भवाय तेज जल धरणी
पाँऊ वऊ विधिक रिवरणी ॥ ७८ ॥ जो सव स्वर सहि
रूपारसगंधा मिलेति निजया ॥ इनि तन मानिक
सहेता ॥ पंचविषय कोहेता ॥ पुनि ये चेंड
यज्ञानां ॥ श्रवणदिमिली विधिनां नां ॥ अरु कर्म
सुइयये च ॥ वचनादिमिली ॥ जु प्रपंचा ॥ ७९ ॥
मन बुद्धि चित्त अहंकारा ॥
रा पुनि देव चतुर्दश नऊ ॥

हेतुतरजतमगुणमाह ॥ प्रथम
मानक ॥ तहकालकर्मसुत्तावापुनिजीवस्व
वत्ताह ॥ तहकालकर्मसुत्तावापुनिजीवस्व
रूपदिषावा ॥ असकालउपाश्वपावयह
मैसुत्रानिमित्तवै पुनिसुत्रसुसुषडखमान
स्पेयप्रत्यकोठानै हेजीवसुचेतनकत्ता ज
उसर्वपदार्थधर्त ॥ मिलिसवहिनकोसंघाता
हजाग्रदवस्थाताता ॥ सात्राहवस्वप्रिमान
तहवत्तादेवप्रमानै हेराजसगुणधिकारा
पुनित्रोगस्थूलपसारा ॥ साकहिनयनस्थान
वाणीवैषयजानै ॥ यहजाग्रदवस्थानिर्णय सुनि
शिष्यसुप्रवदलेय

दशवायुप्राणागादिककहि पंचसुश्रुदियज्ञाने
पुनियंचकर्मसुश्रुदियज्ञाने ॥ तिनकीवतिवधाने
अरुपंचविषयसदादिकज्ञानक ॥ अंतहकलेक
सुश्रुदियज्ञाने ॥ सबइदिय

संतुष्टः (यह काल ऊकामे स्तुत जाव सकल काम निर-
गसरीर कहोवे सिबना मोहि एग जे पुनिता को ते
जो मयत न पावे अव सुप्र अवस्था ता को कहि
रासा ते ज स अजि मानी तह सत गुण विल देवता
जा एऊ जोग वासना ठानी ॥ पुनिक ठ स्थान म
धमावाचा जीवात्मा समत शिष सुप्र अवस्था की
यानि एय सम ऊ दे दि य ह त न य
हलीनं लिङ्ग सरीर न रहे घोर निद्रा व सकीन प्र
सा अजि नानी अव्याकृत जु त ग गुण रूप रश्मि रत्न
हं देवता ज्ञान शानंद स्वरूप पुन म त्यंती वाणी
गुप्त हृदय स्थित क जानिय यह कहत जु सु दोस
अथ स्था सिष्य सत्य करि मानिय
वस्था ज्ञान प्रपंच प्रपंच प्रपंच प्रपंच
दा उर्य वस्था चेतन तत्त्व
त्व ५
तमुक्त

आसंका यह अवतुमते जै है का जेतुमती न सिद्ध
तवधाने ते प्रभु मे कैं करि जाने अवतुमति रियाता
वतावहु तापी है अहीत सुनावहु तुम विन अवत
हैनहि कै ई तुम ही ते तुम ही सा हो
जाइ दारु साधु साधु शिष्य धर्मि प्रली प्रान्त
की नैया को उत खक्क झड़न मिट प्रमत्ती न
चारु कैं अवण मन न की बात नी के निरिध
सपुनि जां न्यो टी के अवसाद कार तु हो ववन्द
हरनहि को री कैं सत
तुरिया साधन वद्य यो हरे तुरिया तीव्र निशुद्ध
हंत रहन को ई नाग न्न न डिमन
षक कुमु सुतोन हिमो न्यर नां निशुद्ध प
रे विषे पुनि विश्वरुते न प्रान्त पंधर प्रान्त
तुरिया नहि दी शत यात्रे न रस रस
रतै हर परतै यै अति स्थान न यत न

[illegible]

प्रतं ताह मध्यमही ककुभूषन प्रजा है जै सैं न प्रमा
हे युनि वा दरन जानियत सुंदर कहत शिष्य रहे प्रमा
भाव है ॥ धा ॥ अथ अन्यो अन्यो भाव ॥ सुव्याख्या ॥ एक
भूमितै प्राजन वऊ विधि कुंडा करवा डिया माटा च
पनीठ कीटन सराव गगारया कल सकहाली ना
नाघाट नाम रूप गुन जवा जुवा पुनि विवहारा
मिन्न हीठाट सुंदर कहत शिष्य पुनि असे अन्यो अ
न्यो भाव विराट ॥ १५ ॥ मून हरहुं ता एक भूमिको वि
कार कचन कहवत है ताऊ के दिवधि प्रांति भू
षन अनंत है मुडिका कंकन कंठ माला सी श फूल
पुनिकुंडल बल यहु डधटिका गनंत है नाम रूप
गुन व्यवहार सब मिन्न मिन्न अंग अंग आपुनी ही
गोनंत है ऐसी प्रांति शिष्य पुनि सुंदर कहत तोहि
विडुषरु अन्यो अन्यो भाव यों अनंत है ॥ १६ ॥ द्वाप
र्या ॥ शिष्य एक भूमिको ताम्रविकारा
न कहवत

गावहि हैनामरूपगुणभिन्नभिन्नहोहासाहाववायप्र
कारा यऊअन्याभावसुकहिए वऊतमाविस्तारा
लोहाप्रगटसुदेपिरोसाऊ
मिदिविकारदिवधिजातितकेनये जगतमाहि
हथियारगुरजसमसेरकदारी वरखीवुगदना
लिकतरनीकुरीसंवारी नामरूपगुणभिन्नभिन्नहो
जहांजैसेतहांसोहा अन्योन्याभावसिख्य
एकेलोहा भूमिदिकीकेपासम
योनानाविधिदरसे पासमलमलसहनसिता
नियजहिसरसे सिरसाफवाफतअधोतरमर
वकाहेर परकालाअरुगजी गनतकरवोरन
लहिए अनिसिख्यकहांलोवरनियहिअंतनहीनि
सदिनकहे रहिअन्योन्याभावतें कार्यकार्यसु
धिलहै पुनिरकाभूमिदिकारत
रुविस्तारवऊविधिदेपिरो जरमूलसायापत्र
पुष्पफलअनेकानपेपिरो तिहिनामरूपगु

जलुभिन्नहि चकृतज्जातिवर्णानियं सो जावअ
न्योअन्यकहिये सिष्पनिष्पसमानिये ॥ १॥
जलविकारअवशुनऊ फेनबुद्बुदात
रंगा ॥ बोलायालाजानिष्पुतो जलही कोअंग ॥ अ
गिविकारमसालचिराकऊदीयकजो ॥ वावि
कारहिजानि ॥ वधूराआंधीहोई ॥ आकाशवि
रसुअअहैं ॥ तेनांनोविधिदेषियेहि ॥ यहअन्यो
अन्याआवसिष्पयंचतत्वमययेषहि ॥ १॥
॥ १॥ एकवृक्षकाएजगत ॥ कार्यहैवऊजाति
चारिषानिविस्तारयह ॥ चौरासीलसजाति ॥ अ
थयुधंसाभाव ॥ १॥ १॥ यऊअमि
रअमिमहिलीन ॥ जलविकारजलमांही ॥ पुनि
तेजविकारतेजमहिमिलिहै ॥ वायुवायुमि
ही ॥ आकाशविकारमिलैआकासहि ॥ काएर
विदालंविषयहयुधंसाभावसुक

सोठहराने
सोताहीमेंकीन असैहीयह जगतसब होख
हममेंलीन
मनहरकंसाश्काहीनप्रकृतिनमह
तत्प्रअहंकारत्रिगुणसदादिव्योमआदिको
हैप्रवणदिवचनादिदेवतानमनआदिस
दमनस्यूलपुनियेकहीनहोहैस्वेदजनअंडज
जरायुजनउदभिजएसुतनपहीहीरुसयह
नजोहैसुंदरकहतवृक्षज्योकोत्योंहीदेखिय
तानतौकछुमयोअवहेनकरुहोहै
कहतससाकेअंगआधिकिनरुनहिदेव
बजरिकुसमआकाशसुतौकरुनहियेयों
हीबंधायुत्रपिंधूरुलतकहिएप्रगजलम
हेंनीरकहंदंटतनहिलहिएरजुमाहिअपनी
नननरासकिरजतसीलगतहैसिषहअ

त्यंताभावश्च निश्चयैः संहसवज्जातहै ॥२॥
दृष्टा ॥ सिष्पयह अत्यंताभावहो ॥ नहि ज्युति स्थितं
प्रलयको ॥ नहि आदिन अतिनमध्यभाव ॥ न
हि शृष्टा शृष्टिनको जयाव ॥ ॥ नहि कारण कार्य
है जयाधि ॥ नहि ईश्वर जीव परै समाधि ॥ नहि तत्त्व
तत्त्व विजागमिन्न ॥ नहि जोति अजोतिक कूनचि
न ॥ ॥ नहि कालन कर्म सुभाव आदि ॥ नहि विद्य
विद्या लगी काहि ॥ नहि राग विराग नुबंध मुक्ता ॥
नहि रूप अरूप अजुक्त युक्त ॥ ॥ नहि अहि प्रमा
ता को प्रमाण ॥ नहि है प्रमेय नहि प्रमाया ए न
हिलय वहै पन निकट दूर ॥ नहि हित सनरजन
चंद बुरा ॥ ॥ नहि शुक्ल न कृष्ण न रक्त पीत नहि
रुख न दीर्घ घाम सीत ॥ नहि अर्थ न धर्म न काम
मोहा ॥ नहि पाप न पुन्य अप्रोक्ष प्रोक्ष ॥ ॥ नहि स्व
गोदि कूनहि नर्क वास नहि त्रा

हिवर्णश्चरनहिस्मृतिचाल॥ नहि संध्यास
त्रनकरेन्यासनहामनजनुप्रतउपास नहि
सुजपासनहारकोश नहिनिगुणसगुणप्रद
होश नहिसेव्यनसेवकसेवकीन नहिहेत
नप्रतिनयेमलीन नहिनदधादसाधापरम
क्ति नहिसालोकादिकचारिष्ठुक्ति नहिसा
धकसाधनसाधसार नहिसिधिनसिद्धननि
र्विकार नहिकर्तृकर्मनक्त्याकोश नहिदृष्ट
सेनद साहोश नहिव्यक्तअव्यक्तअशुद्ध
अह्नहिरक्तविरक्तअबुद्धबुद्ध नहितर्कवित
र्कअधारधीर नहिसून्यअयोरथोर नहि
चित्तअच्युतअडोल नहिमापअमायअतोल
तोल नहिकुशस्थूलनहिज्जवावाल नहि
जुरामत्यनअकालकाल नहिजागदशु
प्रनशुषुप्तिश्च नहीतुरियात्रयसाक्षीमहि

॥ नहि ज्ञेयानि हि तन्मग्न्य नहि ध्याता नहि
ध्यानरम्प ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ जो ककु सुनियें पिये बु
धि विचारै जाहि सो सब बार्णव लास है अमक
रि जानऊ ताहि ॥ यह अत्यात्मा आवहे यह ईतु
रियाता त यह अनुभव साक्षात् यह वह निश्च
य अहीता ॥ ११ ॥ ना ही ना ही करिक ह्यो है है क ह्यो
वषांनि ना ही है कै मध्य है सो अनुभव करि ज
नि ॥ यह ई है परियहन ही ॥ ना ही है है ना हिः य
ह ई य ह ई जांनि त यह अनुभव या मां हे ॥ १२ ॥ अव
क कु कहिवे को न ही कहै कहलौ वैना अनुभव
ही करि जांनियें यह गंगे की सैन ॥ १३ ॥ जो ते रैं सं
देह क कु रह्यो रंच ह हो श तो सिष अज रु प्रभ
करि फिरि सम जां तो हि ॥ १४ ॥ सि ष व ज न न ॥
चौ प र हं ट ॥ हे स्वामि नू संश

तुम्हारे सोवत जागो अब तो सर्व सुप्रकारे जाते
ने श्रुय मम संदेश विलान्यो ॥ १० ॥ परमेश्वर
बाहेक त्वं च संसारः क्वचपमार्थे क्वच व्यवहार
रः क्वच मे जन्म क्वच मे मरणः क्वच मे करणः
क्वच मे अदयः क्वच मे दैतः क्वच मे निर्णय
क्वच मे भीतः क्वच माया क्वच ब्रह्म विचारः क्व
च मे प्रवृत्ति निवृत्तिकारः क्वच मे ज्ञानः क्व
च विज्ञानः क्वच मे मन निर्विषय विषय ज्ञानः क्व
च मे रक्षा क्वच विरलत्वं क्वच मे तत्त्वं क्वच हि अत
त्वं क्वच मे शास्त्रं क्वच मे मंदहः क्वच मे अ
स्ति हि नास्ति हि यत्नः क्वच मे कालः क्वच मे दे
शः क्वच गुरु सिष्यः क्वच उपदेशः क्वच मे
ग्रहणं क्वच मे त्यागः क्वच मे विरतिः क्वच मे र
क्षणेन क्वच मे निस्पृहः क्वच मे हं

क्वचानिहं हं क्वचमेवास्माभ्यंतरासं क्वच
अधजद्वैतिर्येयकासां क्वचमेनाडीसाधन
गंगः क्वचमेलनविलंबविद्येयोगः॥१॥ क्वच
नानात्वं क्वच एकत्वं क्वचमेसून्याशून्यस
मत्वं यो अवसेषं सोमा रूपं वरुना किं उक्तं
च अनूपां॥५॥ दोहं हं दं यह मे श्रीगुरदेव
कौ अनुभवकहो मुना ज्ञो प्रभु कौ परिश्र
मकी योः सो फलपुगटो आशा॥५॥ श्रीगुरु
वा चो॥ चो॥ हं हं॥ हे सिषजो हं हं करिसो हं ते
हिनकतहवाधाहो हं तनिर्धूमचयनिर्दोषा
तै अवषायाजीवनमोषा॥५॥ जो मे कंदो सुह
दय आन्यो ताही क्तमते ब्रह्महिजां न्योः आपु
वलयगजेदमिटायो ज्यो है तं ही निश्चय आ
यो॥१॥ देवैशुनैस्य स्य यवो नैस्य य

यकहंडोले पानपानवस्त्रादिकजोई यहपा
देहकीहोई ॥ १ ॥ निरालंबनिवा

नाश्च चारोपहसंस्कारपवनहिफिरै शु
पराणज्युंदेह जीवमुक्तसंदेहतुलिप्तन

वहंहोई तोको सोईजानिहै तोवतमानजैक
योयाग्यनसमुद्रमहि डवकीमारैआइ

सोईमुक्तफल्लहै डषदरिडसवजाइ ॥ सुंदर
ज्ञानसमुद्रकीमहिमाकहिरकौन अमतरस

सोहैभस्यो ॥ तुमजिनिजानऊँलौन ॥ सुंदर
नसमुद्रमहिवरुतेरत्रअमोल मतकहोई

सोपैहोपैठिनरकईलोल ॥ सुंदरज्ञान
समुद्रको वारपानहिअंतविषई नागैऊऊ

किंकैपैठेकोईसंत ॥ सुंदरज्ञानसमुद्रकीजो
चलिआवैतीर देषतहीसुखउपवैति

[illegible]

॥ राम जी सत्या ॥ खयालि प्रतं ॥ गुरदेव क
॥ इदं वृक्षं ॥ भोज करी गुरदेव दया करि सब
सुनायक हो हरि नरो ॥ ज्यौं र ब्रि कै प्रगटे निस जा
त सुंदर की यो च म भां नि अंधे रो ॥ काय क बाय
क मान स डं करि हे गुरदेव ही बंद मे रो ॥ सुंदर दास
॥ कहै कर जो रिजु दाइ दया ल को डं न ति च रो ॥ १॥ ॥
॥ पूरण ब्रह्म बिचार निरंतर का मन को धन ले
न न मो हे ॥ श्री नवचार सना असुधा ॥ सुदेविक
कूक ऊं नैन न मो हे ॥ ज्ञान सरूप प्रनूप निरूप
आस गिरा सुनि मोहन मो हे ॥ सुंदर दास कहै
कर जो रिजु दाइ दया ल हि मोहन मो हे ॥ २॥ ॥
॥ धीर जवंत अडि गति तें दिय निर्मल ज्ञान ग सो दठ
दु ॥ शील से तोष कामा जिन के घट ला गिर हो सुअ

